साभार : पायनियर
31 अगस्त, 2017

भारत-जापान व्यापार संबंध

प्रवीण साहनी
(संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) के लिए महत्वपूर्ण है।

जापान ने यह स्पष्ट संदेश दे दिया है कि वह मौजूदा भू-रणनीतिक क्रम को बनाए रखने के लिए भारत के साथ एक रणनीतिक साझेदारी चाहता है। अब बारी मोदी की है कि वो रक्षा मंत्रालय में सुस्त पड़े अपने व्यापक नौकरशाहों को जगायें और इस साझेदारी को कायम रखें।

भारत को हाल ही में खत्म हुए डोकलाम चुनौती के दौरान जापान का खुला समर्थन मिला था, जिससे भारत को इस संकट से दूर होने में काफी मदद मिली। देखा जाये तो चीन टोक्यो की आयात कार्रवाई से बिगड़ते हालात को पहचान गया, लेकिन अब समय है कि भारत भी समय की मांग को पहचानते हुए जापान को गले लगाये और ऐसा करने का अवसर सितंबर में सालाना शिखर बैठक के दौरान जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे की भारत यात्रा के दौरान मोदी के पास होगी।

हाल ही में भारत में जापानी राजदूत कांजी हिरामात्सू ने डोकलाम विवाद में भारत का समर्थन किया था, जिसके बाद चीन ने टोक्यो दूत की भारत के पक्ष में बयान देने के कारण निंदा की। देखा जाये तो ऐसा करने का सीधा कारण यह था कि भारत और जापान दोनों पश्चिमी प्रशांत और हिंद महासागर के दो छोरों पर प्रमुख शक्तियां हैं, जहाँ चीन को संयुक्त राज्य की चुनौती को पूरा करने के लिए इन दो महासागरों में सर्वोच्चता सिद्ध करनी होगी और जब तक ये दो देश (भारत और जापान) साथ रहेंगे, तब तक चीन की यह मंशा कभी पूरी नहीं हो सकती।

हालांकि अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन ने अभी तक वैश्विक नेतृत्व की भूमिका और 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति के बीच अपनी प्राथमिकता को परिभाषित नहीं किया है, साथ ही प्रधानमंत्री शिंजो अबे भी चीन की भू-रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को प्रतिबंधित करने के लिए भारत को लुभाने की आवश्यकता को समझते। दूसरी तरफ बीजिंग भी यह समझता है कि रक्षा प्रौद्योगिकी तथा भारत और जापान के बीच संबंध से उसकी विस्तारवादी विदेश नीति को गहरा नुकसान पहुंचेगा।

Japanese FDI in		
Year	India (million US$)	% Change
2008	5,551	268.6
2009	3,664	(-) 34.0
2010-11	2,864	(-) 21.8
2011-12	2,326	(-) 18.8
2012-13	2,786	19.8
2013-14	1,718	(-) 38.36
2014-15	2,084	21.3
2015-16	2,614	25.4

चूंकि सैन्य शक्ति चीन के वैश्विक दृश्य में एक बड़ी भूमिका निभाती है, इसलिए भारत को अनुकूल राष्ट्रों से अत्याधुनिक तकनीकों के अधिग्रहण के प्रयासों के लिए दोगुनी मेहनत करनी चाहिए। जापान ने इस सन्दर्भ में पहले ही हाथ बढ़ा दिए हैं और भारत के समक्ष आकर्षक प्रौद्योगिकी का वादा भी कर दिया है। इस संबंध में यूएस-2 जलस्थलचर विमान (amphibian aircraft) है जो एक सैन्य प्लेटफॉर्म से अधिक है और यह भारतीय नौसेना के लिए बेहद जरूरी है। इसमें भारत और जापान के बीच रक्षा प्रौद्योगिकी के व्यापार को खोलने की क्षमता है। अब यह सवाल उठता है कि जब यह साझेदारी इतनी महत्वपूर्ण है तो ऐसा संभव होने से क्या रोक रहा है? इस सवाल का जवाब यह है कि इसकी राह में रोड़ा भारतीय राजनीतिक उदासीनता नहीं, बल्कि भारत की नौकरशाही की उदासीनता है।

अगर 11 नवंबर, 2016 के शिखर सम्मेलन के अनुसार, टोक्यो में मोदी और अबे के बीच का संयुक्त बयान की बात की जाये तो "प्रधानमंत्री मोदी ने यूएस-2 अम्फाइबियन विमान जैसे अत्याधुनिक रक्षा प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए जापान की तत्परता के लिए उनकी सराहना व्यक्त की थी। यह दोनों देशों के बीच विश्वास की उच्च स्तर का प्रतीक है और जापान और भारत ने अपने द्विपक्षीय रक्षा आदान-प्रदान को आगे बढ़ाने में दूरी तय की है।"

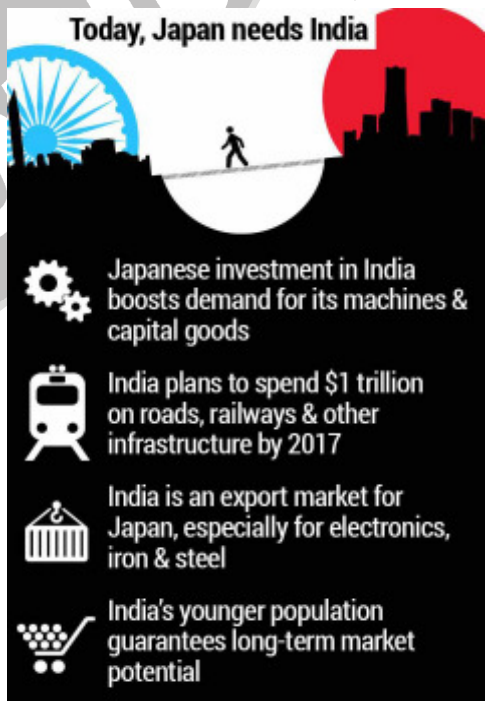

जापान के निः शुल्क और खुले भारत-प्रशांत रणनीतियों के साथ भारत की अधिनियम पूर्व नीति को सुसंगत करने के लिए दोनों पक्षों द्वारा रक्षा सहयोग का मूल्यांकन किया गया है। नतीजतन, यह भारत और जापान में रक्षा नीति, सैन्य संबंधों के लिए सैन्य और दो तट रक्षकों के बीच सहयोग को सुनिश्चित करने वाला एक वार्षिक त्रिपक्षीय वार्ता है।

इसके अलावा, रक्षा फ्रेमवर्क समझौते के तहत, दोनों पक्षों ने रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के प्रवेश-बल की पुष्टि की है। जापान का भारत के साथ रक्षा प्रौद्योगिकी पर काम करने के लिए तैयार होने का कारण जापानी रणनीतिक विशेषज्ञों द्वारा समझाया गया है। उनके अनुसार, भारत एक मजबूत नौसेना शक्ति है, यह भरोसेमंद है, हिंद महासागर क्षेत्र में संयुक्त राज्य द्वारा छोड़ी गई वैक्यूम यानि खाली स्थान को भर सकता है और जापान को इस क्षेत्र को स्थिर करने के लिए भारत की जरूरत है।

यहाँ विवादास्पद मुद्दा जो एक सवाल के रूप में भी है कि क्या भारत, जापान के साथ अपने रक्षा संबंधों के लिए समान रूप से गंभीर है? शायद नहीं, क्योंकि भारत यूएस-2 विमान खरीद कार्यक्रम में देरी कर रहा है जो इसकी मंशा स्पष्ट करता है। देखा जाये तो भारतीय नौसेना ने भी रक्षा मंत्रालय को पांच कारणों का हवाला देते हुए इस प्रौद्योगिकी की खरीद की तीव्र इच्छा व्यक्त की है।

पहला, यूएस -2 हिंद महासागर में सैकड़ों भारतीय द्वीपों की सुरक्षा के लिए आदर्श साबित होगा। अद्वितीय सीमा लेयर कंट्रोल प्रौद्योगिकी के साथ सशस्त्र, यूएस-2 एकमात्र जलस्थलचर विमान है जो सी स्टेट-5 में काम करने में सक्षम है। इसका मतलब यह हुआ कि 280 मीटर की दूरी तय करने और 300 मीटर की लैंडिंग की आवश्यकता के मुताबिक यूएस-2 दुनिया का एकमात्र विमान है जो लहरों की तीन मीटर ऊंचाई पर काम कर सकता है। यह क्षमता इस विमान को न्यूनतम बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता के साथ अंतर-द्वीप समर्थन के लिए एक आदर्श मंच और समुद्र पर विस्तारित कार्यों के लिए एक आदर्श मंच की अनुमति प्रदान करता है।

दूसरा, तीन टन पेलोड के साथ आठ घंटे की धीरज को देखते हुए, यूएस -2 परिचालन के लिए आदर्श है, क्योंकि जहाज के विपरीत, यह सामरिक समुद्री युद्धों को तेजी से सहायता प्रदान कर सकता है।

तीसरा, चूंकि भारत ने पी-8 आई, मिग-29 के, एसयू-30 एमकेआई, राफेल आदि जैसी लंबी दूरी की विमानों को खरीदा है, यूएस-2 एकमात्र ऐसा विमान है जो समुद्र पर विश्वसनीय लंबी दूरी की खोज और बचाव क्षमता प्रदान कर सकता है।

चौथा, अपने सभी मौसम की क्षमता और राज्य के अत्याधुनिक निगरानी रडार फिट को देखते हुए, यूएस -2 को खुफिया, निगरानी और पुनर्प्रेषण कार्यों के लिए नियोजित किया जा सकता है।

अंत में पांचवा, यूएस-2 यात्रा, बोर्ड, खोज और हमले (वीबीएसएस) की भारतीय नौसेना की भूमिका के लिए आदर्श मंच है जो समुद्री कमांडो को समुद्र में तेजी से ले जाकर 26/11 जैसे समुद्री हमले को रोक सकता है।

इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान हिंद महासागर क्षेत्र के अनुकूल देशों को सहायता प्रदान करके एक क्षेत्रीय शक्ति बनते हुए राष्ट्रीय आकांक्षा को आगे बढ़ाने के लिए इस विमान का इस्तेमाल किया जा सकता है। यूएस -2 की खरीद केवल चीन को एक शक्तिशाली संदेश नहीं भेजेगी, बल्कि यह जापान के साथ अपने सामरिक संबंधों के प्रति भारत की गंभीरता को भी व्यक्त करेगा।

लेखक के अनुसार, वरिष्ठ नौसेना के सूत्रों ने बताया है कि इस मामले में पैसे की कोई समस्या नहीं है। उदाहरण के लिए, 7 नवंबर, 2016 को रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) की बैठक, जो टोक्यो में प्रधानमंत्री मोदी की शिखर बैठक से पहले की गई थी, के लिए तीसरी बार यूएस-2 खरीद को सूचीबद्ध किया गया था। पूंजीगत अधिग्रहण परिव्यय में संबंधित सेवा के द्वारा इस संबंध में बजट में होने के बाद इस सौदे को राजनीतिक मंजूरी के लिए डीएसी के लिए सूचीबद्ध किया गया है। विदेश मंत्रालय द्वारा जारी लगातार तीन शिखर सम्मेलन के संयुक्त वक्तव्य में यूएस -2 के सन्दर्भ में यह मान लिया गया था कि रक्षा मंत्रालय इस मामले को सकारात्मक रूप से आगे बढ़ाएगा।

इसके अतिरिक्त, जापान ने जुलाई, 2016 में, यूएस -2 बिक्री को व्यावसायिक रूप से सरकारी-से-सरकारी (जी-टू-जी) श्रेणी में स्थानांतरित करने का फैसला किया था, जिसे भारत ने भी स्वीकार किया था। चूंकि जापानी सरकार यूएस -2 बौद्धिक संपदा अधिकार और प्रशिक्षण क्षमता रखती है, इसलिए यह निर्णय लिया गया कि इस प्रक्रिया की सुविधा के लिए, जापान के अधिग्रहण, प्रौद्योगिकी और रसद एजेंसी (एटीएलए) द्वारा अपने रक्षा मंत्रालय के तहत इस समझौते पर बातचीत करनी चाहिए।

नौसैनिक सूत्रों के अनुसार, एटीएलए (ATLA) ने कई अन्य रियायतों की पेशकश की है, अर्थात, बिक्री के लिए क्रेडिट लाइन पर संभव चर्चा; दोनों एयरक्रेव और तकनीकी सहायता स्टाफ के प्रशिक्षण लागत की छूट; विमान मूल्य का पुनः विचार (प्रत्येक विमान की लागत करीब 120 मिलियन अमरीकी डॉलर) और यहां तक कि भारतीय नौसेना के प्रशिक्षण आवश्यकताओं के लिए एक नया विमान मुक्त करने की पेशकश भी की है। एटीएलए ने भारत के तकनीकी विनिर्देशों के अनुसार विमान का निर्माण करने का भी प्रस्ताव किया है। जापान ने यह भी संकेत दिया है कि अनुकूल विमानों (लगभग मुक्त) पर अपने स्वयं के रक्षा बलों के स्टॉक से कुछ विमानों की पेशकश की संभावना हो सकती है।

उपरोक्त प्रस्तावों से यह पता चलता है कि जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे चाहते हैं कि भारत-जापान का संबंध व्यापार से भी आगे बढ़े। मौजूदा भू-रणनीतिक क्रम को बनाए रखने के लिए यह एक रणनीतिक साझेदारी चाहता है। अब बारी मोदी की हैं कि वो रक्षा मंत्रालय में सुस्त पड़े अपने व्यापक नौकरशाहों को जगायें और इस साझेदारी को कायम रखे।

भारत-जापान परमाणु समझौता

- जापान पूरे विश्व को परमाणु हथियारों से मुक्त बनाना चाहता है। अपनी इस नीति के अनुरूप वह उन्हीं देशों से यह करार करता है, जिन्होंने परमाणु अप्रसार संधि (NPT) पर हस्ताक्षर कर रखे हैं। हाँलाकि भारत उन देशों में नहीं है, फिर भी जापान ने भारत पर भरोसा जताया है। भारत को इसका लाभ निश्चित रूप से मिलेगा।
- इससे परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) की सदस्यता की दावेदारी के लिए भारत की स्थिति को मजबूती मिलेगी।
- भारतीय विद्यार्थियों के लिए अब जापान का वीजा पाना आसान होगा।
- 30,000 भारतीयों को जापानी तरीकों से उत्पादन का प्रशिक्षण दिया जा सकेगा।
- भारत में जापानी उद्योगों की साझेदारी एवं सहयोग से जापान के साथ-साथ भारत को माइक्रो, लघु एवं मध्यम दर्जे के उद्योगों को बहुत लाभ होगा।
- दोनों देश एक-दूसरे की जलीय एवं आकाशीय सीमाओं की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए संयुक्त राष्ट्र के समुद्री नियमों के अनुसार अब खुले रूप से समुद्री व्यापार कर सकेंगे।
- मुम्बई-अहमदाबाद मार्ग पर बुलेट ट्रेन चलाने की योजना।
- आंध्र प्रदेश के कोवाड़ा में बन रहे अमेरिकी रेस्टिंग हाउस ए.पी. -1000 रिएक्टर के लिए चार वितरण स्रोत हैं, जिनमें जापान भी एक है। जापान के साथ इस करार से अब उसका काम आगे बढ़ सकेगा। इस रिएक्टर को जून, 2017 तक चालू करने का लक्ष्य रखा गया है।
- इसी प्रकार जैतपुर में फ्रांस की मदद से बन रहे रिएक्टर का काम भी जापानी स्टील कंपनियों पर आश्रित था। अगर जापान इस समझौते से हट जाता तो काफी परेशानी आ सकती थी। किसी अन्य स्टील कंपनी को उस प्रकार के काम में महारथ हासिल नहीं है।
- जापान ने 2014 से हथियारों के निर्यात पर प्रतिबंध हटा लिया है। इसका लाभ उठाते हुए भारत ने जापान की नामी कंपनी शिनभाषा इंडस्ट्रीज से 12 यूस-2 आई विमान खरीदने का निर्णय लिया है।
- हर्ष का विषय यह है कि इनमें से दस विमानों की एसेंबलिंग भारत में ही 'मेक इन इंडिया' के तहत की जाएगी।
- दोनों पक्षों ने सैन्य तकनीकों के आदान-प्रदान को भी मंजूरी दी है।
- ईरान में भारत के चाबहार बंदरगाह के निर्माण में जापान ने निवेश का वचन दिया है।
- एशिया क्षेत्र में जापान जिस प्रकार से शांतिपूर्ण स्थितियों को बनाए रखने और अन्य देशों की सुरक्षा में सहयोग का पक्षधर है, उसे देखते हुए अब हिंद एवं प्रशांत महासागर में अपनी गैरकानूनी गतिविधि बढ़ाने वाला चीन सतर्क हो जाएगा। इससे भारत की समुद्री सीमाओं को मजबूती मिलेगी।

नाभिकीय रिएक्टर: नाभिकीय रिएक्टर ऐसी डिवाइस हैं, जिसमें नाभिकीय चेन रिएक्शन को नियंत्रित किया जाता है। नाभिकीय रिएक्टर का सबसे बड़ा इस्तेमाल विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। सामान्यतः सभी न्यूक्लियर रिएक्टर नाभिकीय संलयन पर आधारित हैं, जिसमें ईंधन के रूप में यूरेनियम का इस्तेमाल किया जाता है।

संभावित प्रश्न

जापान द्वारा भारत के साथ रक्षा साझेदारी को बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखाना और डोकलाम जैसे विवादित मुद्दे पर खुल कर भारत के साथ खड़े रहना, भारत के प्रति उसके मित्रतापूर्ण रवैये को दर्शाता है। इस कथन के सन्दर्भ में भारत- जापान संबंधो की चर्चा करे और बताएं कि इस संबंध को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए वर्तमान सरकार द्वारा क्या अपेक्षित कदम उठाये जाने चाहिए?

705, IInd Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, New Delhi - 110009
Ph.: 011 - 27658013, 9868365322
GS World